Sangeet Manthan: Article 3 of N: November, 2012

By Dr. Sudha Patwardhan

Send comments and questions to: reflections@vishnudigambarvidyalaya.com

राग–कुछ और तथ्य

राग के नियमों के विषय में पिछले लेख में जो जानकारी दी गई है उससे स्पष्ट है कि राग से रंजन हो इस हेतु वे नियम बने हैं| इसी दिशा में कुछ और तथ्य यहाँ प्रकट होंगे|

हमारे हिंदुस्थानी संगीत की विशेषता है–राग समय सिद्धांत,अर्थात रागों को गाने का एक विशेष समय तय किया गया है |कुछ राग सवेरे गाए जाएँ तो अधिक प्रभाव उत्पन्न करते हैं|जैसे राग भैरव प्रात:काल में और राग मालकौंस रात्रि में अधिक प्रभावकारी प्रतीत होते हैं|प्रात:काल और संध्या काल ये दो विशेष वेलाएं हैं-इस समय का अपना वातावरण होता है| प्रात:समय में गंभीर,साथ ही प्रसन्न छटाओं वाले राग अधिक प्रिय लगते हैं,जबकि संध्या समय में कुछ उत्कंठा ,अवसाद एवं उदासी से भरे राग अधिक अच्छे लगते हैं|यह प्रकृति के नियमों के अनुसार ही होता है| सवेरे मानव उत्साह से परिपूर्ण, उमंग से भरे ह्रदय से दिन का प्रारंभ करता है और संध्या में थका -हारा होता है|सवेरे भैरव और उसके प्रकार गाना मन के अनुकूल होता है| संध्या समय पूर्वी थाट के रिषभ कोमल रिषभ वाले राग जैसे-पूरिया, पूरियाधनाश्री,पूर्वी ऐसे राग सुनने में अच्छे लगते हैं| कुछ उदासी की छटा लिए हुए गाया जाने वाला राग मारवा और मारवा थाट के अन्य राग-श्री,जैताश्री आदि अपना प्रभाव दिखाते हैं | सवेरे ७ से १० बजे तक अधिकतर बिलावल [अल्हैया] और उसके प्रकार जैसे देवगिरी,यमनी आदि का समय होता है| इसके बाद आसावरी,जौनपुरी,भैरवी और तोड़ी थाट के तोड़ी ,गुजरी,बिलासखानी तोड़ी[भैरवी थाट] आदि राग गाए जाते हैं| यह समय होता है-सवेरे १० से दोपहर १ बजे तक का|इसके बाद कड़ी दुपहरी में भी इन्ही अर्थात काफी ,आसावरी,तोडी और कुछ भैरवी थाटके ही रागों का समय होता है| वृन्दावनी सारंग, शुद्ध सारंग, मधमाद सारंग, मिया की सारंग आदि राग इसी समय गाए जाते हैं| इसके बाद के रागों का अर्थात संध्या कालीन संधिप्रकाश रागों का जिक्र पहले ही किया जा चुका है|शाम ७ से १० तक कल्याण और खमाज थाट के राग,जैसे यमन,भूपाली,बिहाग,श्याम कल्याण, केदार, कामोद, हमीर आदि इस समय के राग हैं|रात्रि १० से रात्रि के एक बजे तक पुन: काफी, आसावरी, भैरवी इन थाटों के राग जैसे बागेश्वरी,मालकौंस,दरबारी कान्हड़ा ,अडाना जैसे राग आते हैं| १ बजे से ४ बजे तक पुन: मध्य रात्रि के उत्तरांग प्रधान राग गाए जाते हैं|बसंत,परज जैसे राग इस श्रेणी में आते हैं|

पाठक अब तक जान गए होंगे कि यह राग समय चक्र मानव मन की भावनाओं को ध्यान में रखकर बहुत ही मनोवैज्ञानिक ढंग से निर्मित है|मानव मन की दिन के विभिन्न प्रहरों में जैसी अवस्था रहती है उसी प्रकार से इस समय चक्र की रचना हुई है|जिस प्रकार से हमारे संगीत की राग- व्यवस्था अनुपम है,वैसी ही हमारी समय चक्र की योजना अपने में अनोखी है|एक और अद्भुत बात इसमें जुडी हुई है| प्रत्येक प्रहर के अंत में एक राग ऐसा होता है जो दूसरे प्रहर के आगमन की मानों सूचना देता है,जैसे दोपहर के रागों में मुलतानी एक ऐसा ही राग है|ऐसे राग पर मेल प्रवेशक राग कहलाते हैं|पर अर्थात दूसरे मेल=थाट में प्रवेश करने की सूचना देते हैं|

रे ग ध कोमल वाले या रेग ध नी कोमल वाले गुट में रहने वाला यह राग मध्यम तीव्र लेकर गाया जाता है| इस से यह ज्ञात होता है कि अगले प्रहर अर्थात संध्याकालीन संधिप्रकाश रागों का समय आ पहुंचा है| इसी प्रकार राग जयजयवंती में दोनों गांधार ,दोनों निषाद लगते हैं| खमाज थाट का राग होते हुए भी दूसरा अर्थात कोमल गंधार, यह परमेल प्रवेशक राग है इस बात की सूचना देता है और कल्याण,खमाज आदि थाटों के बाद के अर्थात काफी थाट के आगमन को सूचित करता है|

इस प्रकार से राग समय सिद्धांत भी "राग से रंजन होना चाहिए"इस निकष पर खरा उतरता है| यह था गान समय के आधार पर किया गया राग वर्गीकरण|

अब हम राग वर्गीकारण के कुछ अन्य प्रकार देखेंगे| प्राचीन समय में छह राग,छत्तीस रागिनियाँ इत्यादि प्रकार से वर्गीकरण हुआ करता था,किन्तु समय के चलते वह न रहा| शुद्ध,छायालग और संकीर्ण इस प्रकार का वर्गीकरण प्राचीन ग्रंथों में वर्णित है,किन्तु उसका कुछ अधिक विश्लेषण ,स्पष्टीकरण नहीं दिया गाया है| केवल इतना ही कहा गया है कि जिस राग में अन्य किसी राग का प्रभाव या छटा नहीं पाई जाती वह शुद्ध राग है– जैसे राग भैरव| जिस राग में एक राग की छाया दिखाई दे ,वह छायालग राग है,जैसे राग छायानट| जिस राग में दो से अधिक रागों का मिश्रण हों वह संकीर्ण राग है,जैसे पीलू|

एक वर्गीकरण राग के आरोह और अवरोह में लगनेवाले स्वरों कि संख्या के आधार पर किया जाता है,और वह आज के शास्त्र में प्रयोग में लाया जाता है| वह है–सम्पूर्ण ,षाडव एवं औडव | जिस राग के आरोह और अवरोह में सातों स्वर लिए जाते हैं वह सम्पूर्ण कहलाता है,जिस राग के आरोह और अवरोह में छः स्वर आते हैं ,वह षाडव है;और जिस राग के आरोह व अवरोह में पाँच स्वर आते हैं वह औडव है| इन तीन मुख्य जातियों में से छः उपजातियां निर्माण होती हैं-आरोह में ७ व अवरोह में छः स्वर होते हैं उसे सम्पूर्ण षाडव,जिस राग के आरोह में सात और अवरोह में पांच स्वर होते हैं उसे संपूर्ण औडव,जिस राग के आरोह में छः और अवरोह में सात स्वर होते हैं उसे षाडव सम्पूर्ण, जिस राग के आरोहमे छः और अवरोह में पाँच स्वर होते हैं उसे षाडव औडव कहते हैं| जिस राग के आरोह में पाँच और अवरोह में सात स्वर होते हैं उसे औडव षा डव ,जिस राग के आरोह में पाँच और अवरोह में छः स्वर होते हैं उसे औडव षाडव कहा जाता है| इस प्रकार कुल नौ जातियां होती हैं| हम इस वर्गीकरण के आधार पर रागों को आज भी विभाजित करते हैं| राग की जानकारी देते समय यह राग औडव सम्पूर्ण है इत्यादि बातें छात्रों को बताते हैं|

यहाँ राग नियमों का पालन करने की दृष्टि से यह कहना उचित होगा कि जैसा पहले कहा जा चुका है किसी राग में पाँच से काम स्वर नहीं होते,अपवाद हो सकता है,किन्तु साधारण नियम यही है| अत: उपरोक्त राग जातियां नियम के अनुकूल ही हैं|

English Translation:

Raag: Some more Facts

The rules given about Rag in the last article show that they are constructed in such a way so that Rag can entertain the audiences.

Our Hindusthani Music's main characteristic is Rag Samay or Time theory of Ragas.That means there is a scheduled time for each Rag. Some Ragas ,if sung in the morning ; create more effect.For example, Rag Bhairav sung in the morning is much more effective and Rag Malkauns sung late night creates great effect on the audiences.There are two specific timings --Morning and evening .They have got their own beauty .Ragas having serious as well as melodious shade give a good feeling in the morning.And in the evening Ragas having shades of anxiety,sadness and serenity are more effective. It is according to the rules of nature. A human being starts his day with full enthusiasm and energy and is tired at the end of the day. To sing Bhairav and its other varieties is right according to his fresh mood. In the evening one likes Puriya and Puriya Dnanashree and similar Ragas that come under Poorvi Thaat which uses flat Rishabh . Some Ragas like Marva, Shree, Jaitashree which come under Marva Thaat suit this evening mood, because they have a grey shade and that gives an effect of sadness. From 7 to 10 in the morning is scheduled for Bilaval and its kind ,like Devgiri Bilaval,Yamni Bilaval etc.Then come Asavari and Jeevanpuri[Jaunpuri].Bilaskhani todi which is in Thaat Bhairvi and Gujri Todi and Miya ki Todi that belong to Thaat Todi are sung after that. In the morning from 10 to 1 '0 clock noon is the scheduled time for these Ragas.

Then the afternoon is the time for Thaat Kafi,Asavari,Todi and some Ragas from Thaat Bhairavi.Vrindavani Sarang,Shuddh Sarang ,Madhmad Sarang,Miya ki Sarang are sung in the noon only.Then come Evening Sandhi Prakash Ragas, about which we have already discussed .In the evening from 7 to 10 in the night Ragas like yaman, bhoopali, bihag ,Shyam Kalyan,Kedar, Kamodand Hameer are sung in the night from 10 to late night 1'0 clock.Rag Bageshvri [Bageshree],Malkauns ,Darbari and Adana are Ragas from Thaat Kafi, Bhairvi, Asavari group. From 1'0 clock night to mid night 4 :00 is the time for Basant, Paraj etc. and they are Uttarang Pradhan Ragas .That means later part of the Saptak [Octave] is prominantly used in these Ragas.

Connosseurs by this time might have come to know that Time Theory of Ragas is based upon human feelings and it is very much psychology based . This Time Theory does match human mind's various moods. They are different at

different hours of the day. As our Rag Classification is unparalleled, our Time Theory is also unique one in its place.One more thing is there ,at the end of every Prahar,there comes one Rag that leads towards the next Prahar [the Prahar includes 3 hours]. For instance, Multani -the Rag sung in the afternoon is like that, it indicates towards next Prahar. These type of Ragas are called Par mel Praveshak Ragas.Par means the other[Prahar],that is the Rag that enters into another Prahar and leads to the coming Prahar. Actually it is the group where Re,Ga,Dha, or Re,Ga,Dha and Ni are flat [komal] but Multani has got Madhyam Sharp[teevr] that is the indication Sandhiprakash Prahar--noon 4 to 7 evening. That gives us intimation that next Prahar Ragas' time is about to come.In the same manner Jayjayvanti [jaijaivanti] is a Parmel Praveshak Rag.It uses both the Gandhars as well as both the Nishadas,where as it is sung at the end of Kalyan,Kamod group.It is a Rag which comes in Kalyan,bilaval ,khamaj group,but komal Gandhar indicates the next Kafi Thaat group.And thus it is Parmel Praveshak Rag .According to Indian listener's mind set ,it suits his association. In this way Rag Time Theory keeps the criterion-- Rag should entertain the audiences.

This was the classification of Ragas according to RAG Time Theory.

Now we will see some other types of Rag classification. In ancient times there used to be a classification --Six Male Ragas,36 Female Ragas[Raginees] and their projini etc. But in the course of time it vanished. One more type of Rag classification is there--1 Shudhha 2 Chhayalag and 3 Sankeern Ragas. Shudhha is the Rag that has no shade of any other Rag,Chhayalag is the Rag that has got one Raga's shade in it. And Sankeern is the Rag which is the mixture of more than two Ragas. Examples are like this---Bhairav is the shudhha Rag, Chhayanat is an example given of Chhayalag and Peelu is a Sankeern Rag. But it is not discussed in detail.

One more classification is there ,which is based upon the number of Notes-- that are taken in ascending [Aaroh] and descending [Avaroh] order.That is- 1.Sampoorn--taking all the seven Notes in Aaroh and in Avaroh, 2.Shadav[using six Notes in both Aaroh and Avaroh And 3. Audav--taking only five Notes in Aaroh and Avaroh.